ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–११
दिनांक- मंगलवार, ०८ फरवरी, २०२२

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 20.1 एवं 8.5 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 98 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 64 प्रतिशत, हवा की औसत गति 1.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 1.3 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 4.7 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 12.2 एवं दोपहर में 23.7 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 29.6 मि0मी0 वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(09–13 फरवरी, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 09–13 फरवरी, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अगले 1–2 दिनों में आसमान में हल्के बादल आ सकते है तथा इस अवधि में ज्यादातर स्थानों में मौसम के शुष्क रहने की सम्भावना है। १० फरवरी के आसपास कहीं–कहीं छिटपुट वर्षा हो सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 9 से 13 डिग्री सेल्सियस के बीच बने रहने का अनुमान है।
- औसतन 10–15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पछिया हवा चलने का अनुमान है। 10 फरवरी को पुरवा हवा चल सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 50 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- १० फरवरी को कहीं-कहीं छिटपुट वर्षा की सम्भावना को देखते हुए किसान हल्दी, ओल की तैयार फसलों की खुदाई एवं राई-सरसों की तैयार फसलों की कटाई सावधानी पूर्वक करें तथा समय से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो गाभा की अवस्था में आ गयी हो ३० किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें।
- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में जिंक की कमी के लक्षण दिखाई दें रहें हो तो २.५ किलोग्राम जिंक सल्फेट, १.२५ किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं १२.५ किलोग्राम युरिया को ५०० लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से १५ दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव आसमान साफ रहने पर करें। दीमक कीट का प्रकोप फसल में दिखाई देने पर बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २ लीटर प्रति एकड़ की दर से २०-३० किलो बालू में मिलाकर खड़ी फसलों में समान रूप से व्यवहार मौसम साफ रहने पर ही करें।
- सरसों की फसल को नुकसान पहुचाँने वाला मुख्य कीट लाही (शिशु एवं प्रौढ़) की निगरानी करे। ये सुक्ष्म आकार का कीट है, जो पौधो पर स्थायी रुप से चिपके रहते है एवं पौधो की जड़ो को छोड़कर शेष सभी मुलायम भागो, तने व फलीयों का रस चूसते है। ये कीट मधु-स्त्राव निकालते है, जिससे पौधे पर फंगस का आक्रमण हो जाता है तथा जगह-जगह काले धब्बे दिखाई देते है। ग्रसित पौधों में शाखाएँ कम लगती हैं। पौधे की बढ़वार रुक जाती है। पौधे पीले पड़कर सूखने लगते है। फलीयॉ कम लगती है तथा तेल की मात्रा में भी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए डाईमेथोएट ३० ई०सी० दवा का १.० मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करें।
- गरमा मौसम की सब्जियों की बुआई के लिए जिन किसान भाईयों की खेत की तैयारी हो चुकी है बुआई शुरु कर सकते हैं तथा जिन किसानों का खेत तैयार नही है वैसे किसान भाई खेतों की तैयारी जल्दी करें। १५०-२०० क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पूरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २ लीटर प्रति एकड़ की दर से २०-३० किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें। सब्जियों में निकाई-गुड़ाई करें।
- अरहर की फसल में फल मक्खी कीट की निगरानी करे। इस कीट के मैगट बीजों को खाते है। जिस स्थानों पर मैगट खातें है, वहॉ कवक एवं जीवाणु उत्पन हो जाते है। फलस्वरूप ऐसे दाने खाने योग्य नही रह जाते है और उपज में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराइड दवा १.५ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करें।
- मटर में फली छेदक कीट की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियॉ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। १५-२० टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास २५ ई० सी० या नोवाल्युरॉन १० ई० सी० का १ मि० ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करें।
- पपीता की खेती करने वाले किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि १२ से १७ फरवरी तक नर्सरी की तैयारी कर बीज की बुआई कर दें। अन्यथा देर होने की स्थिति में बढ़ते तापमान के कारण रोपनी के समय पौधे पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।
- केला की सुखी एवं रोगग्रस्त पत्तियों को काटकर खेत से बाहर करें जिससे रोग की उग्रता में कमी आयेगी। हल्की गुड़ाई करने के बाद प्रति केला २०० ग्राम यूरिया, २०० ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश एवं १०० ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करें।

आज का अधिकतम तापमानः २०.७ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ३.७ डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः ६.२ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.१ डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी